❋ 5 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] तुम युद्ध करते हो माया को जीतने के लिए, बाकी इसमें कोई श्वास आदि बन्द नहीं करना है। आत्मा जब शरीर में होती है तो श्वास चलता है। इसमें श्वास आदि बन्द करने की भी कोशिश नहीं करनी है।

2] सतयुग-त्रेता में इन्हों का राज्य था फिर इस्लामी, बौद्धी आदि की आदि की वृद्धि होती गई। वह अपने धर्म को भूल गये। अपने को देवी-देवता कह न सकें क्योंकि अपवित्र बन पड़े। देवतायें तो पवित्र थे। ड्रामा के प्लैन अनुसार फिर वह हिन्दु कहलाने लग पड़ते हैं। वास्तव में हिन्दु धर्म तो है नहीं। हिन्दुस्तान तो नाम बाद में पड़ा है। असली नाम भारत है। कहते हैं भारत माताओं की जय। हिन्दुस्तान की मातायें थोड़ेही कहते हैं। भारत में इन देवताओं का राज्य था।

3] बाप कहते हैं कल तुमको सुख था, कल फिर होगा। तो यहाँ बैठ फूलों को देखते हैं। यह अच्छा फूल है, यह इस प्रकार की मेहनत करते हैं। यह स्थेरियम नहीं है, यह पत्थरबुद्धि है। बाप को कोई बात की चिंता नहीं रहती। हाँ, समझते हैं बच्चे जल्दी पढ़कर साहूकार हो जायें, पढ़ाना भी है। बच्चे तो बने हैं परन्तु जल्दी पढ़कर होशियार हों और वह भी कहाँ तक पढ़ते और पढ़ाते हैं, कैसे फूल हैं- यह बाप बैठ देखते हैं क्योंकि यह है चैतन्य फूलों का बगीचा। फूलों को देखते भी कितनी खुशी होती है। बच्चे खुद भी समझते हैं बाबा स्वर्ग का वर्सा देते हैं।

4] आत्मा का विचार करो, कितनी छोटी है, उनमें कितना पार्ट भरा हुआ है ! जो कभी भी घिसता नहीं हैं। दूसरी आत्मा होती नहीं ! इस दुनिया में ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसको हम बाप, टीचर सतगुरू कहें। यह एक बेहद का बाप है, शिक्षक है सबको शिक्षा देते हैं, मनमनाभव। तुमको भी कहते हैं कि कोई धर्म वाले मिलें, उनको कहो अल्लाह को याद करते हो ना। आत्मायें सब भाई-भाई हैं।

5] बाप कहते हैं– तुम सब सीतायें हो। मैं हूँ राम। सब भक्तों का सद्गति दाता मैं हूँ। सबकी सद्गति कर देते हैं। बाकी सब मुक्तिधाम में चले जाते हैं। सतयुग में दूसरा धर्म कोई होता नहीं, सिर्फ हम ही होते हैं क्योंकि हम ही बाप से वर्सा लेते हैं। यहाँ तो देखो कितने ढेर के ढेर मन्दिर हैं। कितनी बड़ी दुनिया है, क्या-क्या चीजें हैं। वहाँ यह कुछ भी नहीं होगा। सिर्फ भारत ही होगा। यह रेल आदि भी नहीं होगी। यह सब खत्म हो जायेंगे। वहाँ रेल की दरकार ही नहीं। छोटा शहर होगा।

6] फिर इतनी सारी दुनिया खत्म हो जायेगी, बाकी हमारा राज्य रहेगा। इतना सब कुछ खत्म हो, यह सब कहाँ जायेंगे। समुद्र धरती आदि में चले जायेंगे। इनका नाम-निशान भी नहीं रहेगा। समुद्र में जो चीज़ जाती है, वह अन्दर ही खत्म हो जाती है। सागर हप कर लेता है। तत्व तत्व में, मिट्टी मिट्टी मिल जाती है। फिर दुनिया ही सतोप्रधान होती है, उस समय कहा जाता है नई सतोप्रधान प्रकृति। तुम्हारी वहाँ नेचुरल ब्युटी रहती है। लिपिस्टिक आदि कुछ भी नहीं लगाते। तो तुम बच्चों को खुश होना चाहिए। तुम स्वर्ग के परीज़ादे बनते हो।

7] मैं तो कभी सांवरा नहीं बनता हूँ। तुम सांवरे से सुन्दर बनते हो। सदा सुन्दर तो एक ही मुसाफिर है। यह बाबा सांवरा और सुन्दर बनते हैं। तुम सबको सुन्दर बनाकर साथ में ले जाते हैं। तुम बच्चों को सुन्दर बन फिर और सबको सुन्दर बनाना है। बाप तो श्याम-सुन्दर बनते नहीं। गीता में भूल कर दी है, जो बाप के बदले कृष्ण का नाम डाल दिया है, इसको ही कहा जाता है– एकज़ भूल। सारे विश्व को सुन्दर बनाने वाला शिवबाबा उनके बदले जो स्वर्ग का पहला नम्बर सुन्दर बनता है, उनका नाम डाल दिया है, यह कोई समझते थोड़ेही है। भारत फिर सुन्दर बनने का है।

8] स्वर्ग में क्या नहीं होगा, अपार सुख हैं। स्वर्ग तो यहाँ होता है। देलवाडा मन्दिर भी पूरा यादगार है। नीचे तपस्या कर रहे हैं, फिर स्वर्ग कहाँ दिखावे? वह फिर छत में रख दिया है। नीचे राजयोग की तपस्या कर रहे हैं, ऊपर राज्य पद खड़ा है। कितना अच्छा मन्दिर है। ऊपर है अचलघर, सोने की मूर्तियां हैं। उनसे ऊपर है फिर गुरू शिखर। गुरू सबसे ऊपर बैठा है। ऊंच ते ऊंच है सतगुरू। फिर बीच में दिखाया है स्वर्ग। तो यह देलवाडा मन्दिर पूरा यादगार है, राजयोग तुम सीखते हो फिर स्वर्ग यहाँ होगा। देवतायें यहाँ थे ना। परन्तु उनके लिए पावन दुनिया अब बन रही है।

...2

❋ 5 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

[2]

9] ब्राह्मण जन्म भी विशेष, ब्राह्मण धर्म और कर्म भी विशेष अर्थात् सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि ब्राह्मण कर्म में फालो साकार ब्रह्मा बाप को करते हैं। तो ब्राह्मणों की नेचर ही विशेष नेचर है, साधारण वा मायावी नेचर ब्राह्मणों की नेचर नहीं। सिर्फ यही स्मृति स्वरूप में रहे कि मैं विशेष आत्मा हूँ, यह नेचर जब नेचरल हो जायेगी तब बाप समान बनना सहज अनुभव करेंगे। स्मृति स्वरूप सो समर्थी स्वरूप बन जायेंगे– **यही सहज पुरूषार्थ है।**

❋ योग-

1] बाकी थोड़ा समय है इसलिए जल्दी-जल्दी मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पापों का बोझा जो जमा है, वह खलास हो। भल माया की युद्ध चलती है। तुम मुझे याद करेंगे, वह याद करेने से हटायेगी, यह भी बाबा बता देते हैं, इसलिए कभी विचार नहीं करना।

2] तुम जितना बाप को याद करते हो, उतना तुम पवित्र बनते हो। पवित्र बनते जायेंगे तो फिर सजा भी नहीं खायेंगे। अगर सजायें खाई तो पद कम हो जायेगा इसलिए जितना याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होते रहेंगे।

3] बाप को याद करते रहेंगे तो पाप कटते जायेंगे। नहीं तो सज़ा खाकर फिर पद पायेंगे। उसको कहा जाता है– **मानी और मोचरा।** बाप को ऐसा याद करो तो जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जायें। चक्र को जानना भी है। चक्र फिरता रहता, कब बन्द नहीं होता।

4] अब बाप शिक्षा देते हैं कि मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे।

5] बाबा ऐसे नहीं कहते कि तुम धन्धा आदि नहीं करो। नहीं, वह सब कुछ करना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते, बाल बच्चों आदि को सम्भालते सिर्फ अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो क्योंकि मैं पतित-पावन हूँ।

6] बाप की याद से आत्मा पवित्र बन जायेगी तो फिर शरीर भी नया मिलेगा। यह है बेहद का सन्यास।

❋ धारणा-

1] बाप शिक्षा देते हैं– बच्चे, जितना हो सके याद में रहो। माया के तूफानों से डरो नहीं।

2] ज्ञान स्नान नहीं करेंगे तो तुम देवता बनेंगे नहीं। और कोई उपाय है नहीं।

3] बच्चों की सम्भाल भल करो बाकी अभी बच्चे पैदा नहीं करो। नहीं तो वह याद आते रहेंगे। इन सबके होते हुए भी इनको भूल जाना है। जो कुछ तुम देखते हो यह सब खत्म हो जाने वाले हैं।

❋ सेवा-

1] बाबा एक-एक को बैठ देखते हैं– यह बाबा को कितना याद करते हैं, कितना ज्ञान उठाया है, औरों को कितना समझाते हैं। है बहुत सहज, सिर्फ बाप का परिचय दो। बैज तो बच्चों के पास है ही। बोलो, यह है शिवबाबा। काशी में जाओ तो भी शिवबाबा-शिवबाबा कह याद करते, रड़ी मारते हैं। तुम हो सालिग्राम।